सोमरसेट पश्चिमी,
दक्षिण अफ्रीका
नवम्बर १६, २००३

सन्देश संख्या ६२

'अनाम–अस्तित्व' के सहस्रनाम

अनिर्वचनीय को वचन में बद्ध नहीं कर सकते फिर भी इसे महसूस किया जा सकता है। अनाम अस्तित्व का नाम नहीं हो सकता है फिर भी इसे सहस्र मार्गों से समझा जा सकता है। यह समझदारी रक्त कोशिकाओं में न कि विश्वासबन्धनों में; करुणा और बोध की ऊर्जा में न कि अनुबन्धन और निष्कष से उत्पन्न ''अनुभव'' में; अन्तर्दृष्टि के गहन आयाम में न कि प्रभाव और धारणा की हठधर्मी कल्पनाओं के जाल में; वैराग्य और त्याग की गहन प्रज्ञा में न कि चाहने व पाने की क्षुद्र मनोवृत्ति में हो सकती है।

मानवता के प्राचीन ग्रन्थ में १०८ छन्द हैं, प्रत्येक छन्द में अनाम–अस्तित्व की ओर संकेत करने वाले सात से बारह ''नाम'' हैं। इन ''नामों'' पर ध्यान करने से मन निर्मन में, बुद्धि चैतन्य में, अहंबोध प्रबोध में, स्मृति शाश्वतत्व के परम पवित्र साँचे में, मस्तिष्क परमानन्द मंगलमयता और आशीर्वाद के एक उपकरण में पिघल सकता है। इन सहस्र ''नामों'' पर ध्यान मस्तिष्क के अवरोध और बन्धन का, जो कि मन के अपवित्र उपज के मापदण्डों में सीमित है, का विस्फोट कर सकता है। तब ''सहस्रार'' का रहस्यात्मक सहस्रदल कमल पुष्पित और विकसित हो सकता है। ध्याता के बिना ध्यान अर्थात् ध्यानशील जागृति की अब शुरूआत होती है :–

विष्णु सहस्रनाम

छन्द संख्या – १ (नौ नाम)

१.	विश्वम्	:	ब्रह्माण्ड
२.	विष्णु	:	धारण (ब्रह्माण्ड का)
३.	वषट्कार	:	शुद्धता
४.	भूत–भव्य–भवत्प्रभु	:	भूत–भविष्य एवं वर्तमान का स्वामी
५.	भूतकृत्	:	प्राणियों की रचना
६.	भूतभृत्	:	प्राणियों का पालन
७.	भाव	:	प्राणियों का व्यवहार
८.	भूतात्मा	:	प्राणियों का सार
६.	भूतभावन	:	प्राणियों की तन्मात्रा

छन्द संख्या – २ (आठ नाम)

१.	पूतात्मा	:	पवित्र आत्मा (१०)
२.	परमात्मा	:	सर्वोच्च आत्मा (११)
३.	मुक्तानां परमागति	:	मुक्ति के सर्वश्रेष्ठ गन्तव्य (१२)
४.	अव्यय	:	अपरिवर्तनशील (१३)
५.	पुरुष	:	ब्रह्माण्डीय चैतन्य (चिति) (१४)
६.	साक्षी	:	द्रष्टाविहीन दृष्टि (१५)
७.	क्षेत्रज्ञ	:	''जो हैं'' के प्रति जागरूकता (१६)
८.	अक्षर	:	अक्षय (१७)

छन्द संख्या – ३ (सात नाम)

१.	योग	:	समन्वय (सामञ्जस्य) (१८)
२.	योगविदां नेता	:	यौगिक प्रत्यक्षबोध की ओर गति (१६)
३.	प्रधान पुरुषेश्वर	:	परम दिव्य चैतन्य (२०)
४.	नारसिंह वपु	:	मनुष्य–सिंह का देह रूप (२१)
५.	श्रीमान्	:	श्रद्धामय (२२)
६.	केशव	:	सुकेशी (२३)
७.	पुरुषोत्तम	:	सर्वोत्तम चैतन्य (२४)

छन्द संख्या – ४ (बारह नाम)

१.	सर्व	:	सर्वेसर्वा (२५)
२.	शर्व	:	गुणातीत (२६)
३.	शिव	:	शिशुवत् (२७)

४. स्थाणु : आलय (२८)
५. भूतादि : मूल घटक (२६)
६. अव्यय–निधि : अक्षयकोष (३०)
७. सम्भव : सम्भावनायें (३१)
८. भावन : शुद्ध प्रत्यक्षबोध (न कि मानसिक अवधारणायें) (३२)
६. भर्ता : भरण–पोषण करने वाला पति (३३)
१०. प्रभव : ज्योतिर्मय (३४)
११. प्रभु : कान्तिमय (३५)
१२. ईश्वर : पूर्णत्व (३६)

छन्द संख्या – ५ (नौ नाम)

१. स्वयम्भू : स्वयं प्रकट होने वाला (३७)
२. शम्भु : प्रशान्ति में निवास करने वाला (३८)
३. आदित्य : द्वैत से परे (३६)
४. पुष्कराक्ष : स्वास्थ्य एवं पु(४०)
५. महास्वन : विभूतिमय कल्याण (४१)
६. अनादिनिधन : अनन्त अस्तित्व (४२)
७. धाता : सत् का आधार (४३)
८. विधाता : आधार का आधार (४४)
६. धातुरुत्तम : सर्वोत्तम आधार (४५)

छन्द संख्या – ६ (नौ नाम)

१. अप्रमेय : अपरिभाष्य (४६)
२. हृषीकेश : संयमन (४७)
३. पद्मनाभ : कमलनाभि (४८)
४. अमरप्रभु : मृत्युरहित सत्ता (४६)
५. विश्वकर्मा : ब्रह्माण्ड शिल्पी (५०)
६. मनु : मनोभाव (५१)
७. त्वा : संतुष्टि (५२)
८. स्थविष्ठ : विस्तीर्ण (५३)
६. स्थविरो ध्रुव : गहन स्थिरता (५४)

छन्द संख्या – ७ (नौ नाम)

१. अग्राह्य : अज्ञेय (५५)
२. शाश्वत : नित्य (५६)
३. कृष्ण : अकर्त्ता (५७)
४. लोहिताक्ष : नेत्रों की चमक (५८)
५. प्रतर्दन : मनोलय (५६)
६. प्रभूत : प्रचुरता (६०)
७. त्रिककुब्धाम : इन तीन आयामों का अवलम्ब (६१)
८. पवित्र : पुनीत (६२)
६. मंगलं परम् : सर्वोत्तम कल्याण (६३)

छन्द संख्या – ८ (दस नाम)

१. ईशान : नियामक (६४)
२. प्राणद : प्राणवायु प्रदाता (६५)
३. प्राण : श्वास (६६)
४. ज्येष्ठ : अग्रज (६७)
५. श्रेष्ठ : सर्वोत्तम भ्राता (६८)
६. प्रजापति : रखवाला (६६)
७. हिरण्यगर्भ : गहनता की स्वर्णज्योति (७०)
८. भूगर्भ : ग्रहों की गहनता (७१)
६. माधव : सौम्य (७२)

१०.	मधुसूदन	:	और की दौड़ को समाप्त करने वाला (अर्थात् तुष्टि प्रदाता) (७३)

छन्द संख्या – ६ (ग्यारह नाम)

१.	ईश्वर	:	सम्पूर्ण सचेतनता (७४)
२.	विक्रमी	:	ऊर्जस्वी (७५)
३.	धन्वी	:	सिद्धि (७६)
४.	मेधावी	:	पाण्डित्य (७७)
५.	विक्रम	:	ऊर्जा (७८)
६.	क्रम	:	व्यवस्था (७६)
७.	अनुत्तम	:	अद्वितीय रूप से श्रेष्ठ (८०)
८.	दुराधर्ष	:	अजेय (८१)
६.	कृतज्ञ	:	एहसानमन्द (८२)
१०.	कृति	:	कार्य (८३)
११.	आत्मवान्	:	यथार्थोन्मुख (८४)

छन्द संख्या – १० (दस नाम)

१.	सुरेश	:	सम्पूर्ण संगीत (८५)
२.	शरण	:	सबका आश्रय (८६)
३.	शर्म	:	सभी का आल्हाद (८७)
४.	विश्वरेता	:	ब्रह्माण्ड के बीज (८८)
५.	प्रजाभव	:	जीवन का स्रोत (८६)
६.	अह	:	दिनानुदिन (६०)
७.	संवत्सर	:	वर्ष के पश्चात् वर्ष (६१)
८.	व्याल	:	समझने में कठिन (६२)
६.	प्रत्यय	:	तथापि समझा जा सकता है (६३)
१०.	सर्वदर्शन	:	सर्वत्र समझ सकते हैं (६४)

छन्द संख्या – ११ (नौ नाम)

१.	अज	:	अजन्मा (६५)
२.	सर्वेश्वर	:	सबको अतिक्रमित करने वाला (६६)
३.	सिद्ध	:	पूर्ण (६७)
४.	सिद्धि	:	पूर्णता (६८)
५.	सर्वादि	:	सबका उद्गम (६६)
६.	अच्युत	:	असीम (१००)
७.	वृषाकपि	:	पुंस्त्व एवं संवेदनशीलता (१०१)
८.	अमेयात्मा	:	नाप योग्य नहीं (१०२)
६.	सर्वयोग विनिःसृत	:	ब्रह्माण्डीय सामञ्जस्य की उत्पत्ति (१०३)

छन्द संख्या – १२ (दस नाम)

१.	वसु	:	जीवन (१०४)
२.	वसुमना	:	चैतन्य (१०५)
३.	सत्य	:	सच्चाई (१०६)
४.	समात्मा	:	स्थितप्रज्ञता (१०७)
५.	सम्मित	:	सन्तुलन (१०८)
६.	सम	:	समानता (१०६)
७.	अमोघ	:	अचूक (११०)
८.	पुण्डरीकाक्ष	:	कमलनयन (१११)
६.	वृषकर्मा	:	प्रबलकार्य (११२)
१०.	वृषाकृति	:	कठिन उपलब्धि (११३)

छन्द संख्या – १३ (नौ नाम)

१.	रुद्र	:	ताप जो निरामय करता है (११४)
२.	बहुशिरा	:	बहु मस्तक (प्रचण्ड बुद्धि) (११५)
३.	बभ्रु	:	ग्रहों का रक्षक (११६)
४.	विश्वयोनि	:	ब्रह्माण्ड का गर्भ (११७)
५.	शुचिश्रवा	:	पावन संगीत का श्रवण (११८)

६.	अमृत	:	सुधा (११६)
७.	शाश्वत स्थाणु	:	नित्य निवास (१२०)
८.	वरारोह	:	आरोहण (१२१)
६.	महातपा	:	बड़ा व्रत (१२२)

छन्द संख्या – १४ (दस नाम)

१.	सर्वग	:	गतिशीलता (१२३)
२.	सर्वविद्वानु	:	सबका प्रतिभाशाली ज्ञाता (१२४)
३.	विष्वक्सेन	:	संगठन (दुों का) न होने देना (१२५)
४.	जनार्दन	:	वास करने वाला (समस्त उत्पन्न जीवों में) (१२६)
५.	वेद	:	ज्ञान (१२७)
६.	वेदवित्	:	ज्ञाता (ज्ञान का) (१२८) (विभेदकारी चित्तवृत्ति केवल सूचना प्राप्त करने वाला है, यह ज्ञाता नहीं है)
७.	अव्यङ्ग	:	जानने के अनेक आयाम (१२६)
८.	वेदाङ्ग	:	मानने के अनेक आयाम (१३०)
६.	वेदवित्	:	प्रज्ञावान (१३१)
१०.	कवि	:	कवि (१३२)

छन्द संख्या – १५ (आठ नाम)

१.	लोकाध्यक्ष	:	अस्तित्व का स्वामी (१३३)
२.	सुराध्यक्ष	:	दिव्यता का स्वामी (१३४)
३.	धर्माध्यक्ष	:	परिरक्षण का स्वामी (१३५)
४.	कृताकृत	:	समस्त कारण और कार्य (१३६)
५.	चतुरात्मा	:	चारों वेदों का सार (अर्थात् वेदान्त) (१३७)
६.	चतुर्व्यूह	:	विभेदकारी चित्तवृत्ति के चार आयाम (स्मृति, बुद्धि, मन, अहंकार) (१३८)
७.	चतुर्द्रं	:	आध्यात्मिक शिक्षा के चार दन्त : आस्था, स्पर्श, संवाद तथा परस्पर भेंट का समय (१३६)
८.	चतुर्भुज	:	चार भुजायें (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) (१४०)

छन्द संख्या – १६ (दस नाम)

१.	भ्राजिष्णु	:	प्रकाश–रश्मियाँ (१४१)
२.	भोजन	:	खाद्य सामग्री (१४२)
३.	श्रीनिवास	:	पवित्र निवास (१८३)
४.	सतांगति	:	पावन यात्रा (१८४)
५.	अनिरुद्ध	:	अविरल (१८५)
६.	सुरानन्द	:	संगीत का आह्लाद (१८६)
७.	गोविन्द	:	दीप्ति (१८७)
८.	गोविदांपति	:	दीप्ति का स्वामी (१८८)

छन्द संख्या – २१ (नौ नाम)

१.	मारीचि	:	ज्योतिर्मय (१८६)
२.	दमन	:	व्रती (१६०)
३.	हंस	:	असत् का त्याग (१६१)
४.	सुपर्ण	:	उपयोगिता (१६२)
५.	भुजगोत्तम	:	सतर्कता (जागरूकता) (१६३)
६.	हिरण्यनाभ	:	निर्भीकता (१६४)
७.	सुतपा	:	उद्यम (१६५)
८.	पद्मनाभ	:	विसंदूषण (अनुबंधन रहित) (१६६)
६.	प्रजापति	:	सभी का स्वामी (१६७)

छन्द संख्या – २२ (ग्यारह नाम)

१.	अमृत्यु	:	मृत्युरहित (१६८)
२.	सर्वदृक	:	सब पर दृष्टि (१६६)
३.	सिंह	:	सिंह (तेजस्वी) (२००)

४.	सन्धाता	:	सतर्क रक्षक (२०१)
५.	सन्धिमान्	:	समझौताकारी (२०२)
६.	स्थिर	:	शान्त (२०३)
७.	अज	:	कभी न पैदा हुआ (२०४)
८.	दुर्मर्षण	:	अलभ्य (२०५)
६.	शास्ता	:	दुता–सुधारण (२०६)
१०.	विश्रुतात्मा	:	अगोचर (२०७)
११.	सुरारिहा	:	साधुता के शत्रुओं का नाश (२०८)

छन्द संख्या – २३ (नौ नाम)

१.	गुरु	:	अज्ञान का नाश (२०६)
२.	गुरुतम	:	श्रेष्ठ गुरू (२१०)
३.	धाम	:	तीर्थ (२११)
४.	सत्य	:	सच्चाई (२१२)
५.	सत्य पराक्रम	:	सच्ची सत्यनिष्ठा (२१३)
६.	निमिष	:	आँख–पलक–प्रक्रिया (२१४)
७.	अनिमिष	:	फिर भी पलकहीन (२१५)
८.	स्रग्वी	:	पवित्र ध्वनियों की स्वर संगति (२१६)
६.	वाचस्पतिरुदारधी	:	उदार सम्प्रेषक (२१७)

छन्द संख्या – २४ (दस नाम)

१.	अग्रणी	:	पहल–शक्ति (२१८)
२.	ग्रामणी	:	अलौकिक सौन्दर्य (२१६)
३.	श्रीमान्	:	अत्यन्त रमणीय (२२०)
४.	न्याय	:	न्यायशील (२२१)
५.	नेता	:	नेतृत्व (२२२)
६.	समीरण	:	प्रवाहमान (२२३)
७.	सहस्रमूर्धा	:	सहस्रशीर्ष (२२४)
८.	विश्वात्मा	:	अस्तित्व का सार (२२५)
६.	सहस्राक्ष	:	सहस्रनेत्र (पूर्ण अवलोकन) (२२६)
१०.	सहस्रपात्	:	हजार पैरों वाला (उच्च कोटि की दृढ़ता, कोई क्लान्ति नहीं) (२२७)

छन्द संख्या – २५ (आठ नाम)

१.	आवर्तन	:	परिवर्तन के चक्र (२२८)
२.	निवृत्तात्मा	:	अपरिवर्तनशीलता (२२६)
३.	संवृत	:	तथापि परिवर्तनशील (२३०)
४.	सम्प्रमर्दन	:	प्रकटन (२३१)
५.	अहःसंवर्तक	:	दिन प्रतिदिन (२३२)
६.	वह्नि	:	अग्नि (२३३)
७.	अनिल	:	अस्थिर (२३४)
८.	धरणीधर	:	सब धारणों का धारक (२३५)

छन्द संख्या – २६ (ग्यारह नाम)

१.	सुप्रसाद	:	आशीर्वाद (२३६)
२.	प्रसन्नात्मा	:	प्रसन्नता (२३७)
३.	विश्वधृक्	:	ब्रह्माण्डीय परिरक्षण (२३८)
४.	विश्वभुक्	:	ब्रह्माण्डीय अन्तर्लयन (२३६)
५.	विभु	:	आकाश (२४०)
६.	सत्कता	:	शुभ कर्ता (२४१)
७.	सत्कृत	:	शुभ क्रिया (२४२)
८.	साधु	:	ईमानदारी (२४३)
६.	जह्नु	:	गंगा नदी का उद्गम (२४४)
१०.	नारायण	:	मानवता के उद्धारक (२४५)
११.	नर	:	मानवता (२४६)

छन्द संख्या – २७ (नौ नाम)

१.	असंख्येय	:	अगणनीय (२४७)
२.	अप्रमेयात्मा	:	अज्ञेय (२४८)
३.	विशि	:	अद्वितीय (२४६)
४.	शिकृत्	:	पूर्ण क्रिया (२५०)
५.	शुचि	:	शुद्ध (२५१)
६.	सिद्धार्थ	:	सिद्धि की उपलब्धि (२५२)
७.	सिद्धसंकल्प	:	सिद्धि के लिए प्रतिबद्ध (२५३)
८.	सिद्धिद	:	सिद्धि की विभूति (२५४)
६.	सिद्धिसाधन	:	सिद्धि के लिए तापस (२५५)

छन्द संख्या – २८ (नौ नाम)

१.	वृषाही	:	इच्छा–पूर्ति (२५६)
२.	वृषभ	:	पुंस्त्व (२५७)
३.	विष्णु	:	आधार (२५८)
४.	वृषपर्वा	:	प्रबल रूप से जाग उठना (२५६)
५.	वृषोदर	:	अन्तर्विष्ट (२६०)
६.	वर्धन	:	वृद्धि (२६१)
७.	वर्धमान	:	विस्तार (२६२)
८.	विविक्त	:	परिवर्तन से अप्रभावित (२६३)
६.	श्रुतिसागर	:	ध्वनि समुद्र (२६४)

छन्द संख्या – २६ (दस नाम)

१.	सुभुज	:	सुन्दर हाथ (२६५)
२.	दुर्धर	:	(किन्तु) पकड़ने में कठिन (२६६)
३.	वाग्मी	:	वक्ता (किन्तु सुनने में कठिन) (२६७)
४.	महेन्द्र	:	महाराजा (२६८)
५.	वसुद	:	कुशल–क्षेम प्रदाता (२६६)
६.	वसु	:	कुशल–क्षेम (२७०)
७.	नैकरूप	:	रूपहीन (२७१)
८.	बृहद्रूप	:	विराट रूप (२७२)
६.	शिपिवि	:	प्रकाश–रश्मियाँ (२७३)
१०.	प्रकाशन	:	ज्योति (२७४)

छन्द संख्या – ३० (आठ नाम)

१.	ओजस्तेजोद्युतिधर	:	समस्त दीप्ति (सूक्ष्म तथा स्थूल) का आधार (२७५)
२.	प्रकाशात्मा	:	स्वयं ज्योति (२७६)
३.	प्रतापन	:	प्रभावी (२७७)
४.	ऋद्ध	:	जागरूकता (२७८)
५.	स्पाक्षर	:	सुन्दर हस्ताक्षर (२७६)
६.	मन्त्र	:	स्पष्ट स्तुति (२८०)
७.	चन्द्रांशु	:	मधुर चन्द्रालोक (२८१)
८.	भास्करद्युति	:	उज्ज्वल सूर्यालोक (२८२)

सन्देश संख्या ६३ में क्रमशः –

नमस्तस्मै
विष्णवे
प्रभविष्णवे